اٰیاتها ٣٠ ﴿٣٢﴾ سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ ٧٥ رکوعاتها ٣

सूरए सज्दह मक्किय्या है, इस में तीस आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓمّٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾ اَمْ

किताब का उतारना[2] बेशक परवर्दगारे आ़लम की त़रफ़ से है क्या

يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ

कहते हैं[3] उन की बनाई हुई है[4] बल्कि वोही ह़क़ है तुम्हारे रब की त़रफ़ से कि तुम डराओ ऐसे लोगों को जिन के पास

مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला न आया[5] इस उम्मीद पर कि वोह राह पाएं अल्लाह है जिस ने आस्मान

وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ مَا

और ज़मीन और जो कुछ इन के बीच में है छ[6] दिन में बनाए फिर अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया[6] उस से

لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ

छूट कर (ला तअ़ल्लुक़ हो कर) तुम्हारा कोई ह़िमायती न सिफ़ारिशी[7] तो क्या तुम ध्यान नहीं करते काम की तदबीर

الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ

फ़रमाता है आस्मान से ज़मीन तक[8] फिर उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करेगा[9] उस दिन कि जिस की मिक़्दार

اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ

हज़ार बरस है तुम्हारी गिनती में[10] येह[11] है हर निहां और इय्यां का जानने वाला इ़ज़्ज़तो

1 : सूरए सज्दह मक्किय्या है सिवा तीन आयतों के जो "اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا" से शुरूअ़ होती है। इस सूरत में तीस आयतें और तीन सो अस्सी कलिमे और एक हज़ार पांच सो अठ्ठारह ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी क़ुरआने करीम का मो'जिज़ा कर के इस त़रह़ कि इस के मिस्ल एक सूरत या छोटी सी इ़बारत बनाने से तमाम फ़ुसह़ा व बुलग़ा आ़जिज़ रह गए। 3 : मुश्रिकीन कि येह किताबे मुक़द्दस 4 : या'नी सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की 5 : ऐसे लोगों से मुराद ज़मानए फ़ित्रत के लोग हैं, वोह ज़माना कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द से सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत तक था कि उस ज़माने में अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से कोई रसूल नहीं आया। 6 : जैसा इस्तिवा कि उस की शान के लाइ़क़ है। 7 : या'नी ऐ गुरौहे कुफ़्फ़ार जब तुम अल्लाह तआ़ला की राहे रिज़ा इख़्तियार न करो और ईमान न लाओ तो न तुम्हें कोई मददगार मिलेगा जो तुम्हारी मदद कर सके न कोई शफ़ीअ़ जो तुम्हारी शफ़ाअ़त करे। 8 : या'नी दुन्या के क़ियामत तक होने वाले कामों की अपने ह़ुक्म व अम्र और अपने क़ज़ा व क़दर से। 9 : अम्र व तदबीर, फ़ना ए दुन्या के बा'द। 10 : या'नी अय्यामे दुन्या के ह़िसाब से और वोह दिन रोज़े क़ियामत है, रोज़े क़ियामत की दराज़ी बा'ज़ काफ़िरों के लिये हज़ार बरस के बराबर होगी और बा'ज़ के लिये पचास हज़ार

www.dawateislami.net

الرَّحِيۡمُ ۙ﴿۶﴾ الَّذِىۡۤ اَحۡسَنَ كُلَّ شَىۡءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلۡقَ الۡاِنۡسَانِ مِنۡ

रह़मत वाला वोह जिस ने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई[12] और पैदाइशे इन्सान की इब्तिदा

طِيۡنٍ ۚ﴿۷﴾ ثُمَّ جَعَلَ نَسۡلَهٗ مِنۡ سُلٰلَةٍ مِّنۡ مَّآءٍ مَّهِيۡنٍ ۚ﴿۸﴾ ثُمَّ سَوّٰٮهُ وَ

मिट्टी से फ़रमाई[13] फिर उस की नस्ल रखी एक बे क़द्र पानी के ख़ुलासे से[14] फिर उसे ठीक किया और

نَفَخَ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِهٖ وَجَعَلَ لَـكُمُ السَّمۡعَ وَالۡاَبۡصَارَ وَالۡاَفۡـِٕدَةَ ؕ

उस में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकी[15] और तुम्हें कान और आंखें और दिल अ़त़ा फ़रमाए[16]

قَلِيۡلًا مَّا تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۹﴾ وَقَالُوۡۤا ءَاِذَا ضَلَلۡنَا فِى الۡاَرۡضِ ءَاِنَّا لَفِىۡ

क्या ही थोड़ा ह़क़ मानते हो और बोले[17] क्या जब हम मिट्टी में मिल जाएंगे[18] क्या फिर

خَلۡقٍ جَدِيۡدٍ ؕ بَلۡ هُمۡ بِلِقَآءِ رَبِّهِمۡ كٰفِرُوۡنَ ﴿۱۰﴾ قُلۡ يَتَوَفّٰٮكُمۡ مَّلَكُ

नए बनेंगे बल्कि वोह अपने रब के ह़ुज़ूर ह़ाज़िरी से मुन्किर हैं[19] तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात देता है मौत का

الۡمَوۡتِ الَّذِىۡ وُكِّلَ بِكُمۡ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمۡ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۱۱﴾ وَلَوۡ تَرٰٓى اِذِ

फ़िरिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है[20] फिर अपने रब की त़रफ़ वापस जाओगे[21] और कहीं तुम देखो जब

الۡمُجۡرِمُوۡنَ نَاكِسُوۡا رُءُوۡسِهِمۡ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ؕ رَبَّنَاۤ اَبۡصَرۡنَا وَسَمِعۡنَا

मुजरिम[22] अपने रब के पास सर नीचे डाले होंगे[23] ऐ हमारे रब अब हम ने देखा[24] और सुना[25]

فَارۡجِعۡنَا نَعۡمَلۡ صَالِحًا اِنَّا مُوۡقِنُوۡنَ ﴿۱۲﴾ وَلَوۡ شِئۡنَا لَاٰتَيۡنَا كُلَّ نَفۡسٍ

हमें फिर भेज कि नेक काम करें हम को यक़ीन आ गया[26] और अगर हम चाहते हर जान को उस की हिदायत

बरस के बराबर जैसे कि सूरए मआ़रिज में है ''تَعۡرُجُ الۡمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوۡحُ اِلَيۡهِ فِىۡ يَوۡمٍ كَانَ مِقۡدَارُهٗ خَمۡسِيۡنَ اَلۡفَ سَنَةٍ'' और मोमिन पर येह दिन एक नमाज़े फ़र्ज़ के वक़्त से भी हलका होगा जो दुन्या में पढ़ता था जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा। **11 :** ख़ालिक़े मुदब्बिर جَلَّ جَلَالُهٗ **12 :** ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत बनाई, हर जानदार को वोह सूरत दी जो उस के लिये बेहतर है और उस को ऐसे आ'ज़ा अ़त़ा फ़रमाए जो उस के मआ़श के लिये मुनासिब हैं। **13 :** ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को इस से बना कर। **14 :** या'नी नुत़्फ़े से **15 :** और उस को बे ह़िस बेजान होने के बा'द ह़स्सास और जानदार किया **16 :** ताकि तुम सुनो और देखो और समझो। **17 :** मुन्किरीने बअ़्स **18 :** और मिट्टी हो जाएंगे और हमारे अज्ज़ा मिट्टी से मुमताज़ न रहेंगे **19 :** या'नी मौत के बा'द उठने और ज़िन्दा किये जाने का इन्कार कर के वोह उस इन्तिहा तक पहुंचे कि आक़िबत (आख़िरत) के तमाम उमूर के मुन्किर हैं ह़त्ता कि रब के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर होने के भी। **20 :** उस फ़िरिश्ते का नाम इज़्राईल عَلَيْهِ السَّلَام है और वोह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से रूहें क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर हैं, अपने काम में कुछ ग़फ़्लत नहीं करते, जिस का वक़्त आ जाता है बे दरंग उस की रूह़ क़ब्ज़ कर लेते हैं। मरवी है कि मलकुल मौत के लिये दुन्या मिस्ल कफ़े दस्त (हथेली की मानिन्द) कर दी गई है तो वोह मशारिक़ व मग़ारिब की मख़्लूक़ की रूहें बे मशक़्क़त उठा लेते हैं और रह़मत व अ़ज़ाब के बहुत फ़िरिश्ते उन के मा तह़्त हैं। **21 :** और ह़िसाब व जज़ा के लिये ज़िन्दा कर के उठाए जाओगे। **22 :** या'नी कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन **23 :** अपने अफ़्आ़ल व किरदार से शरमिन्दा व नादिम हो कर और अ़र्ज़ करते होंगे **24 :** मरने के बा'द उठने को और तेरे वा'दए वईद के सिद्क़ को जिन के हम दुन्या में मुन्किर थे। **25 :** तुझ से तेरे रसूलों की सच्चाई को तो अब दुन्या में **26 :** और अब हम ईमान ले आए। लेकिन उस वक़्त का ईमान लाना उन्हें कुछ काम न देगा।

هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّیْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

अ़ता फ़रमाते[27] मगर मेरी बात क़रार पा चुकी कि ज़रूर जहन्नम को भर दूंगा उन जिन्नों और आदमियों

اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۳﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِیْتُمْ لِقَآءَ یَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِیْنٰكُمْ وَ

सब से[28] अब चखो बदला उस का कि तुम अपने इस दिन की हाज़िरी भूले थे[29] हम ने तुम्हें छोड़ दिया[30]

ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا یُؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا

अब हमेशा का अ़ज़ाब चखो अपने किये का बदला हमारी आयतों पर वोही ईमान लाते हैं

الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا

कि जब वोह उन्हें याद दिलाई जाती हैं सज्दे में गिर जाते हैं[31] और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलते हैं और

یَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۱۵﴾ السجدة تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ السجدة ۹

तकब्बुर नहीं करते उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से[32] और अपने रब को पुकारते हैं

خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ

डरते और उम्मीद करते[33] और हमारे दिये हुए में से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक

لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا

उन के लिये छुपा रखी है[34] सिला उन के कामों का[35] तो क्या जो ईमान वाला है

كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ؕ لَا یَسْتَوٗنَ ﴿۱۸﴾ اَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وقف لازم وقف غفران وقف غفران

वोह उस जैसा हो जाएगा जो बे हुक्म है[36] येह बराबर नहीं जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

27 : और उस पर ऐसा लुत्फ़ करते कि अगर वोह उस को इख़्तियार करता तो राहयाब होता, लेकिन हम ने ऐसा न किया क्यूं कि हम काफ़िरों को जानते थे कि वोह कुफ़्र ही इख़्तियार करेंगे। **28 :** जिन्हों ने कुफ़्र इख़्तियार किया और जब वोह जहन्नम में दाख़िल होंगे तो जहन्नम के ख़ाज़िन उन से कहेंगे **29 :** और दुन्या में ईमान न लाए थे। **30 :** अ़ज़ाब में, अब तुम्हारी त़रफ़ इल्तिफ़ात न होगा। **31 :** तवाज़ोअ़ और ख़ुशूअ़ से और ने'मते इस्लाम पर शुक्र गुज़ारी के लिये। **32 :** या'नी ख़्वाबे इस्तिराह़त के बिस्तरों से उठते हैं और अपने राह़तो आराम को छोड़ते हैं **33 :** या'नी उस के अ़ज़ाब से डरते हैं और उस की रह़मत की उम्मीद करते हैं, येह तहज्जुद अदा करने वालों की ह़ालत का बयान है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि येह आयत हम अन्सारियों के ह़क़ में नाज़िल हुई कि हम मग़रिब पढ़ कर अपनी क़ियाम गाहों को वापस न आते थे जब तक कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ नमाज़े इ़शा न पढ़ लेते। **34 :** जिस से वोह राह़तें पाएंगे और उन की आंखें ठन्डी होंगी **35 :** या'नी उन त़ाअ़तों का जो उन्हों ने दुन्या में अदा कीं **36 :** या'नी काफ़िर है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से वलीद बिन उ़क़्बा बिन अबी मुऐ़त किसी बात में झगड़ रहा था। दौराने गुफ़्तगू कहने लगा ख़ामोश हो जाओ, तुम लड़के हो मैं बूढ़ा हूं, मैं बहुत ज़बान दराज़ हूं, मेरी नोके सिनान तुम से ज़ियादा तेज़ है, मैं तुम से ज़ियादा बहादुर हूं, मैं बड़ा जथ्थेदार हूं। ह़ज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : चुप ! तू फ़ासिक़ है। मुराद येह थी कि जिन बातों पर तू नाज़ करता है इन्सान के लिये उन में से कोई क़ाबिले मद्ह़ नहीं, इन्सान का फ़ज़्ल व शरफ़ ईमान व तक़्वा में है, जिसे येह दौलत नसीब नहीं वोह इन्तिहा का रज़ील है, काफ़िर मोमिन

www.dawateislami.net

فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ؕ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا

उन के लिये बसने के बाग़ हैं उन के कामों के सिले में मेहमान दारी[37] रहे वोह जो बे हुक्म हैं[38]

فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَاۤ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَ قِيْلَ

उन का ठिकाना आग है जब कभी उस में से निकलना चाहेंगे फिर उसी में फेर दिये जाएंगे और उन से फ़रमाया

لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَ لَنُذِيْقَنَّهُمْ

जाएगा चखो उस आग का अ़ज़ाब जिसे तुम झुटलाते थे और ज़रूर हम उन्हें चखाएंगे

مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَ

कुछ नज़्दीक का अ़ज़ाब[39] उस बड़े अ़ज़ाब से पहले[40] जिसे देखने वाला उम्मीद करे कि अभी बाज़ आएंगे और

مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ

उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से नसीह़त की गई फिर उस ने उन से मुंह फेर लिया[41] बेशक हम मुजरिमों से

مُنْتَقِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ ع ١٥

बदला लेने वाले हैं और बेशक हम ने मूसा को किताब[42] अ़ता फ़रमाई तो तुम उस के मिलने में शक न करो[43]

وَ جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٣﴾ ج وَ جَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ

और हम ने उसे[44] बनी इसराईल के लिये हिदायत किया और हम ने उन में से[45] कुछ इमाम बनाए कि हमारे हुक्म

بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؗ ط وَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ

से बताते[46] जब कि उन्हों ने सब्र किया[47] और वोह हमारी आयतों पर यक़ीन लाते थे बेशक तुम्हारा रब

के बराबर नहीं हो सकता। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की तस्दीक़ में येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **37 :** या'नी मोमिनीने सालिह़ीन की जन्नते मावा में इ़ज़्ज़तो इक्राम के साथ मेहमान दारी की जाएगी। **38 :** ना फ़रमान काफ़िर हैं **39 :** दुन्या ही में क़त्ल और गिरिफ़्तारी और क़ह़त व अमराज़ वग़ैरा में मुब्तला कर के। चुनान्चे ऐसा ही पेश आया कि हुज़ूर की हिजरत से क़ब्ल क़ुरैश अमराज़ व मसाइब में गिरिफ़्तार हुए और बा'दे हिजरत बद्र में मक़्तूल हुए गिरिफ़्तार हुए और सात बरस क़ह़त की ऐसी सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे कि हड्डियां और मुर्दार और कुत्ते तक खा गए। **40 :** या'नी अ़ज़ाबे आख़िरत से **41 :** और आयात में ग़ौर न किया और उन के वुज़ूह़ व इर्शाद से फ़ाएदा न उठाया और ईमान से बहरा अन्दोज़ न हुवा। **42 :** या'नी तौरैत **43 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को किताब के मिलने में, या येह मा'ना हैं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मिलने और इन से मुलाक़ात होने में शक न करो। चुनान्चे शबे मे'राज हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से मुलाक़ात हुई, जैसा कि अह़ादीस में वारिद है। **44 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को या तौरैत को **45 :** या'नी बनी इसराईल में से **46 :** लोगों को ख़ुदा की ता़अ़त और उस की फ़रमां बरदारी और **अल्लाह** तआ़ला के दीन और उस की शरीअ़त का इत्तिबाअ़, तौरैत के अह़काम की ता'मील, और येह इमाम अम्बियाए बनी इसराईल थे या अम्बिया के मुत्तबिईन। **47 :** अपने दीन पर और दुश्मनों की त़रफ़ से पहुंचने वाली मुसीबतों पर। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि सब्र का समरा इमामत और पेशवाई है।

www.dawateislami.net

يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَوَلَمْ

उन में फ़ैसला कर देगा[48] क़ियामत के दिन जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते थे[49] और क्या

يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ

उन्हें[50] इस पर हिदायत न हुई कि हम ने उन से पहले कितनी संगतें[51] हलाक कर दीं कि आज येह उन के घरों में चल फिर रहे हैं[52]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ

बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं तो क्या सुनते नहीं[53] और क्या नहीं देखते कि हम पानी भेजते हैं

اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ

ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़[54] फिर उस से खेती निकालते हैं कि उस में से उन के चौपाए और वोह ख़ुद खाते हैं[55]

اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ الثلثة وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٨﴾ الثالثة

तो क्या उन्हें सूझता नहीं[56] और कहते हैं येह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो[57]

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٢٩﴾

तुम फ़रमाओ फ़ैसले के दिन[58] काफ़िरों को उन का ईमान लाना नफ़्अ़ न देगा और न उन्हें मोहलत मिले[59]

فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع ٣ ١٥ ١٢

तो उन से मुंह फेर लो और इन्तिज़ार करो[60] बेशक उन्हें भी इन्तिज़ार करना है[61]

48 : या'नी अम्बिया में और उन की उम्मतों में या मोमिनीन व मुश्रिकीन में **49 :** उमूरे दीन में से और हक़ व बातिल वालों को जुदा जुदा मुमताज़ कर देगा। **50 :** या'नी अहले मक्का को **51 :** कितनी उम्मतें मिस्ले आद, समूद व क़ौमे लूत के **52 :** या'नी अहले मक्का जब ब सिल्सिलए तिजारत शाम के सफ़र करते हैं तो उन लोगों के मनाज़िल व बिलाद में गुज़रते हैं और उन की हलाकत के आसार देखते हैं। **53 :** जो इब्रत हासिल करें और पन्द पज़ीर हों। **54 :** जिस में सब्ज़े का नामो निशान नहीं **55 :** चौपाए भूसा और वोह ख़ुद ग़ल्ला **56 :** कि वोह येह देख कर अल्लाह तआला के कमाले क़ुदरत पर इस्तिद्लाल करें और समझें कि जो क़ादिरे बरहक़ ख़ुश्क ज़मीन से खेती निकालने पर क़ादिर है मुर्दों का ज़िन्दा करना उस की क़ुदरत से क्या बईद। **57 :** मुसल्मान कहा करते थे कि अल्लाह तआला हमारे और मुश्रिकीन के दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा और फ़रमां बरदार और ना फ़रमान को उन के हस्बे अमल जज़ा देगा। इस से उन की मुराद येह थी कि हम पर रहमत व करम करेगा और कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन को अज़ाब में मुब्तला करेगा। इस पर काफ़िर बतौरे तमस्खुर व इस्तिहज़ा कहते थे कि येह फ़ैसला कब होगा उस का वक़्त कब आएगा ? अल्लाह तआला अपने हबीब से इर्शाद फ़रमाता है **: 58 :** जब अज़ाबे इलाही नाज़िल होगा **59 :** तौबा व मा'ज़िरत की। फ़ैसले के दिन से या रोज़े क़ियामत मुराद है या रोज़े फ़त्हे मक्का या रोज़े बद्र, बर तक़्दीरे अव्वल अगर रोज़े क़ियामत मुराद हो तो ईमान का नाफ़ेअ़ न होना ज़ाहिर है क्यूं कि ईमान वोही मक़्बूल है जो दुन्या में हो और दुन्या से निकलने के बा'द न ईमान मक़्बूल होगा न ईमान लाने के लिये दुन्या में वापस आना मुयस्सर आएगा और अगर फ़ैसले के दिन से रोज़े बद्र या रोज़े फ़त्हे मक्का मुराद हो तो मा'ना येह हैं कि जब कि अज़ाब आ जाए और वोह लोग क़त्ल होने लगें तो हालते क़त्ल में उन का ईमान लाना क़बूल न किया जाएगा और न अज़ाब मुअख़्ख़र कर के उन्हें मोहलत दी जाए। चुनान्चे जब मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह हुवा तो क़ौमे बनी किनाना भागी, हज़रते ख़ालिद बिन वलीद ने जब उन्हें घेरा और उन्हों ने देखा कि अब क़त्ल सर पर आ गया कोई उम्मीद जां बरी की नहीं तो उन्हों ने इस्लाम का इज़्हार किया, हज़रते ख़ालिद ने क़बूल न फ़रमाया और उन्हें क़त्ल कर दिया। (جمل وغیرہ) **60 :** उन पर अज़ाब नाज़िल होने का। **61 :** बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की हदीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रोज़े जुमुआ़ नमाज़े फ़ज्र में येह सूरत या'नी सूरए सज्दह और सूरए दह्र पढ़ते थे। तिरमिज़ी की हदीस में है कि जब तक हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net